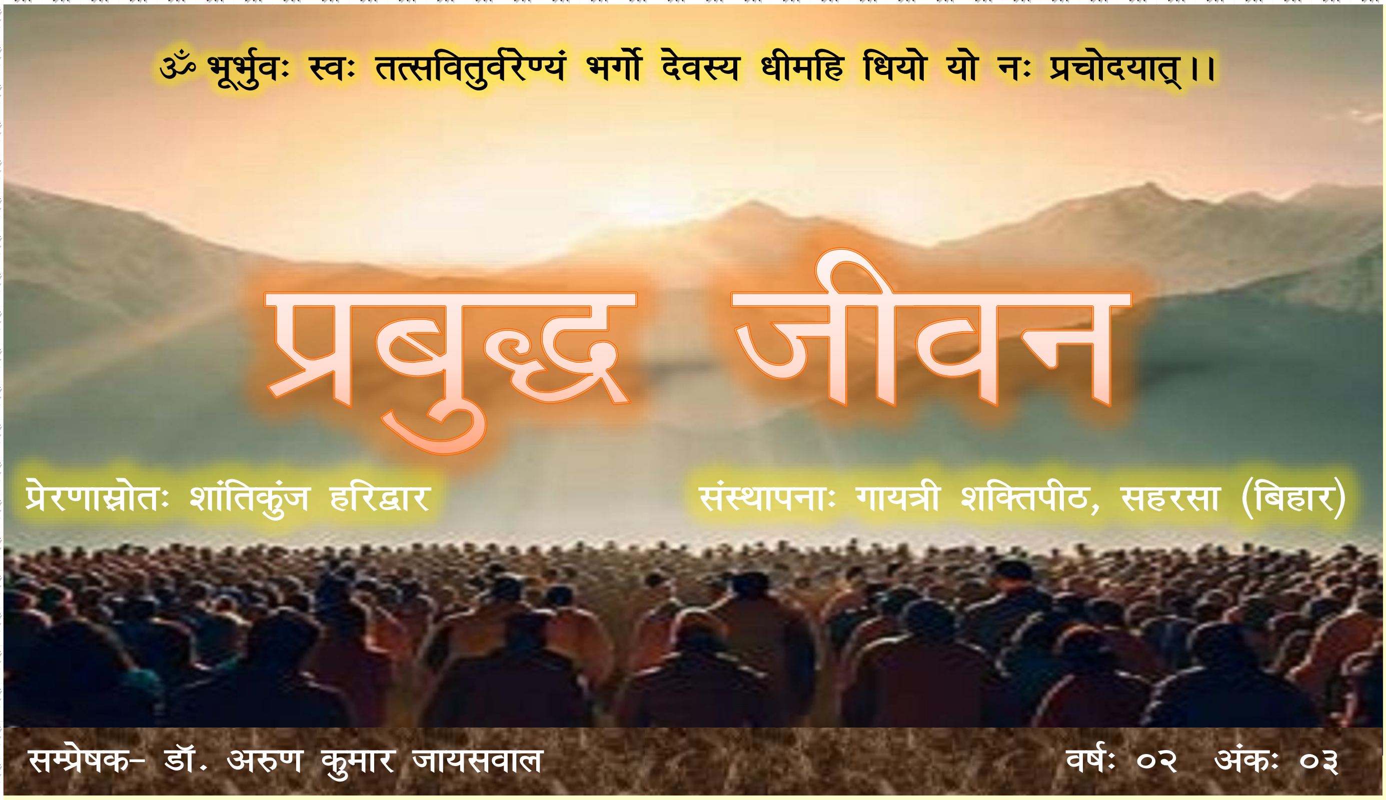

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

प्रबुद्ध जीवन

प्रेरणास्रोतः शांतिकुंज हरिद्वार संस्थापनाः गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा (बिहार)

सम्प्रेषक- डॉ. अरुण कुमार जायसवाल वर्षः ०२ अंकः ०३

'दूरदर्शिता अपनायें'

अदूरदर्शिता से तात्पर्य है- दूरवर्ती परिणामों को न देख सकना। तात्कालिक लाभ पर आँखें मूँदकर टूट पड़ना। लालच इसी को कहते हैं। तुरंत-फुरंत अधिकाधिक मनोकामनाओं को पूरा करने की उतावली में प्रायः ऐसे अनर्थ बन पड़ते हैं जो परिणाम में असाधारण कष्ट देते हैं। उस मक्खी का उदाहरण सभी को ही विदित होगा, जो भरी कड़ाही की चासनी को एक बार में खा जाने के लालच में झपट पड़ी थी और पंख, पैर फँस जाने पर जान गँवाने के लिए विवश हुई थी। और भी ऐसे कितने ही प्राणी हैं। मछुए मछलियों को ऐसा ही लालच दिखा कर उन्हें बेमौत मरने के लिए सहमत करते हैं। ठगों का भी यही व्यवसाय है। वे मित्र बनाते हैं, लालच दिखाते हैं और भोले लोगों की बुरी तरह हजामत बनाते हैं। यदि इन फँसने वालों में भविष्य के खतरे समझने की समझ रही होती तो वे इतना भारी जोखिम उठाने से बच सकते थे।

उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए दूरगामी परिणति को समझ सकने की पैनी सूझ-बूझ चाहिए। ऐसे व्यक्ति सदा भविष्य की बात सोचते हैं, उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकने योग्य वर्तमान का निर्धारण करते हैं। किसान अपने खेतों के साथ लंबे समय तक पूरी तरह गुँथा रहता है। खाद पानी, बीज, रखवाली आदि के लिए पूरी सतर्कता बरतता और जेब से खर्च करता है, क्योंकि उसे यह विश्वास रहता है कि समय आने पर इसका समुचित प्रतिफल फल मिलेगा। अपवाद तो यदा कदा ही होते हैं। माली अपने बगीचे में पूरी लगन और मेहनत के साथ जुटता है। तत्काल उसे कुछ लाभ नहीं होता, पर समय आने पर फल-फूलों के अंबार से उसका घर भर जाता है। व्यापारी को भी व्यवसाय में आरंभिक पूँजी फँसानी पड़ती है। सरंजाम जुटाने में काफी दौड़ धूप करनी पड़ती है। कारीगरों से लेकर ग्राहक जुटाने में पैनी दृष्टि से खोज बीन करनी पड़ती है। उसका यह श्रम निरर्थक नहीं जाता। उसका समुचित लाभ समयानुसार मिलकर रहता है। दूरदर्शी ही है, जो भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में समग्र एकाग्रता बरतते हैं। तन्मय, तत्पर होकर उज्ज्वल भविष्य को लक्ष्य मानकर उसकी साधना में एकनिष्ठ होकर जुटते हैं और अभीष्ट सफलता प्राप्त करके कृतकृत्य बनते हैं।

हृदय से हृदय तक

जब भी कोई शुभ कार्य शुरू किया जाता है तो उन परम मंगलदायक विघ्नहर्ता श्रीगणेश जी का स्मरण करते हुए हृदय के उद्‌गार स्वयं फूट पड़ते हैं– श्री गणेशाय नमः। 'आदौ पूज्यो विनायकः'– इस प्रसिद्ध उक्ति के अनुसार समस्त कार्यों के प्रारंभ में श्रीगणेश जी की अग्रपूजा भारतीय संस्कृति में सुप्रसिद्ध और प्रचलित है। गौरीनंदन पूज्य श्रीगणेश जी की इस गरिमा का हेतु कहते हुए रामचरितमानस में तुलसी बाबा बताते हैं– 'महिमा जासु जान गनराऊ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभऊ।।

श्रीगणेश जी सर्वविघ्नों के हर्ता हैं। विघ्नहर्ता के अनेकों रूप हैं जिनमें आठ प्रमुख रूपों और उनकी लीलाकथाओं का वर्णन मुद्‌गल पुराण में मिलता है– वक्रतुण्ड, एकदन्त, महोदर, गजानन, लम्बोदर, विकट, विघ्नराज और धूम्रवर्ण। श्रीगणेश जी सर्वरूप, ब्रह्मस्वरूप हैं। 'गणपति अथर्वशीर्ष' में 'त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुरुद्रः' इत्यादि के द्वारा उन्हें 'सर्वरूप' कहा गया है। गणेश पुराण, मुद्‌गल पुराण आदि पुराणों में व अन्य तत्संबंधी साहित्यों में भी श्रीगणेश जी का परब्रह्मस्वरूप का वर्णन प्राप्त होता है। सृष्टि की उत्पत्ति के बाद उसके संचालन में आसुरी शक्तियों द्वारा जो विघ्न बाधाऐं उपस्थिति की जाती हैं, उनका निवारण करने के लिए स्वयं परमात्मा गणपति के रूप में प्रकट होकर ब्रह्माजी के सहायक होते हैं।

श्रीगणेश जी ही एक ऐसे देवता हैं, जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार की सफलताओं को एक साथ देने में समर्थ–सक्षम हैं। उनका जन्म भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को हुआ था जो गणेश चतुर्थी के नाम से पूरे संसार में उमंग और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन का बड़ा आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व है। इसीलिए इस दिन व्रत किया जाता है एवं अनेकानेक विशिष्ट साधनात्मक प्रयोग संपन्न किये जाते हैं।

इस विशिष्ट दिन में गणेश चतुर्थी की पूजन सामग्री में दूर्वा, शमी के पत्ते और मोदक को मुख्य माना जाता है क्योंकि ये गणेश जी के प्रिय माने जाते हैं। शास्त्रों में इस संबंध में कहा गया है कि दूर्वा का अर्थ जीव होता है। जिस प्रकार जीव जन्म–जन्मांतर में अर्जित पुण्य और पापों के फलस्वरूप सुख–दुःख भोगने के लिए बार–बार जन्म लेता है, उसी प्रकार दूर्वा अपनी अनेक जड़ों से जन्म लेती है। हवन के अवसर पर इस सुख–दुःख रूपी द्वन्द्व को दूर्वा–युग्म से समर्पित किया जाता है। इससे जीव सत्वगुण संपन्न होकर मोक्ष को प्राप्त करता है। शमी का पत्र गणेश जी को प्रिय है और मोदक तो उनका प्रिय भोज्य है ही। मोदक आनंद का प्रतीक है। इसे गणेश जी को अर्पित करने का अर्थ है– सदैव आनंद में निमग्न रहना और ब्रह्मानंद में लीन होना जाना। दूसरी ओर मोदक की गोल आकृति महाशून्य का प्रतीक है जिसकी विशालता पूर्णत्व है, जो प्रत्येक स्थिति में पूर्ण है और यह पूर्णता प्रणव मंत्र का गुण है। अतः 'गणेश' प्रणव के प्रतीक हैं।

गणपति के पूजन के द्वारा परब्रह्म परमेश्वर का ही पूजन होता है। शास्त्रकथन है कि जो साधक पवित्र भाव से गणेश चतुर्थी का व्रत करता है, उसकी बुद्धि और चित्तवृत्ति शुद्ध होती है। अन्य दिनों में गणेश मंत्र का जप फलदायी तो होता ही है, गणेश चतुर्थी के व्रत के साथ जप का प्रभाव बहुगगुणित हो जाता है। आप सभी पूर्ण श्रद्धा–विश्वास के साथ इस व्रत को विधिपूर्वक संपन्न करें और मंगलमूर्ति श्री गणेश जी आपके जीवन और परिवार पर मंगल आशीष की वृष्टि करें।

अरुण कुमार जायसवाल

FLATTERY

There is a difference between flattery and genuine appreciation. Flattery is the highest form of deception and one of the falsest traits in a human being because it is directly linked to dishonesty and cruelty as well. Cruelty too because the person who flatters the other is someone who intentionally has this purpose to advantage herself or himself. It is misleading as well. The intentions are wrong, dishonest and ultimately lead to the downfall of the person who is on the other end of receiving the flattery. When a group of people or a person realize that a certain person can be easily manipulated or be greatly benefitted from; they get into this big game of fallaciously gratifying the person. The person who likes sweet talk is also an active participant in letting the personal self down into a never-ending downfall alley without realizing it.

Lives have been destroyed by sycophants and there are several examples abound that are explicit with how the person who enjoys flattery has been permanently ruined. The adulation does not last long as soon as the freebies stop coming or the person no longer holds power. So, it is a good weather sail and when the ships are about to drown, everyone deserts the water vessel. The person who enjoys flattery is also at a huge peril. They make the fatal mistake of believing what the flatterer says. They lack the integrity to recognize the truth about themselves or their situations. Such people also hate critics because they cannot bear their criticism. They enjoy the heaps of praises from wrong doers and the biggest collapse occurs when a genuine well wisher is pushed out of the circle. A well wisher who might not adulate falsely but points out to the potential pits and hold the mirror. Such people get thrown out because the flatter makes sure that the good people never surround the person who they have decided to make a fool of. They don't want the truth to surface because then their whole falsities will also begin to show.

History shows us how some stupid kings failed to see through the shortcomings of their own losses because they surrounded themselves with a coterie that never let the facts dawn on the king. The king believes only those courtiers who flatter him because he is naïve and foolish enough to believe that they praise him because they respect him. What happens eventually is that the enemies have conquered these provinces with great ease and vanquished the existing rulers.

Even the bard mentions this in King Lear. The daughter who speaks the truth gets banished from the kingdom and the daughters who flatter their father meaning with heaps of sweet talk are appreciated. When the real time then comes, the old King realizes his mistake and repents that he misunderstood the daughter who spoke the truth.

The best way to understand flattery is by possessing some understanding of the person who praises. Is this person genuine in real life and a bearer of good character? What have you done that you deserve their praises? These questions are parts of self introspection as well and from time to time help us reflect on many circumstances and the people who come along with it.

Flattery destroys the potential of seeing the truth and when truth gets destroyed, doomsday is arriving.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

आस्तिकता या नास्तिकता: ईश्वर की प्राप्ति का सबसे सरल साधन क्या

ईश्वर किसी आस्तिकता का नाम नहीं अपितु भक्त की साँस और धड.कन का नाम है । भक्त को यह कभी सोचना ही नहीं पड.ता कि ईश्वर हैं या नहीं हैं । उसका यह मन्तव्य होता है कि वह है तो ईश्वर हैं । स्पष्ट है कि अगर शिशु का अस्तित्व है तो उसके माता - पिता का अस्तित्व भी होगा ही । शिशु कहीं आकाश से तो टपककर नहीं आ गया । बस उस शिशु का स्वयं के अन्दर अनुसन्धान करना होता है, उसे अपने मनःगर्भ से प्रकट करना होता है । वह शिशु हमारे जीवन में प्रकट हो इसके लिए उस शिशु के प्राकट्य की प्रक्रिया से भी गुजरना पड.ता है । इस प्राकट्य की प्रक्रिया को नास्तिकता से आस्तिकता की यात्रा का नाम दिया जा सकता है । ईश्वर न केवल आस्तिकता का नाम है न केवल नास्तिकता का नाम है । अपितु ईश्वर एक अनुसन्धान का नाम है, एक खोज का नाम है, एक अविष्कार का नाम है जो नास्तिकता की अंधेरी गुफा में आस्तिकता के स्वर्णिम सूर्य के उदय होने पर ही दिखाई देता है । यानि एक सफल मानव जीवन की यात्रा नास्तिकता की रात्रि से आस्तिकता के प्रभात की यात्रा है । नास्तिकता में आस्तिकता ठीक उसी तरह छुपी है जैसे रात में दिन ।

वस्तुतः केवल मन पर टिके लोग ही ईश्वर को आस्था और अनास्था के कठघडे में खींचते हैं । पर शास्त्रों के अनुसार ''मैं मन नहीं हूँ आत्मा हूँ'' इस पहेली को सुलझाना ही हमारे जीवन का ध्येय होना चाहिए । हाँ, यह सही है कि इस पहेली को सुलझाना हमारे अकेले के वश की बात नहीं है । इस हेतु हमें आस्तिकता की मदद लेनी पड.ती है क्योंकि साथी के बिना अंधेरे कक्ष में कौन जाना चाहेगा ? तो हमारे मन का जो भाव हमारा साथ देता है वह है आस्त्किता और जो भाव हमें तोड.ने की कोशिश करता है, कष्ट देता वह है नास्तिकता । तो इसका मतलब है कि आस्था हमारे लिए ईश्वर है और अनास्था असुर है जिसमें मन की सकारात्मकता को आस्तिकता कहा जा सकता है और नकारात्मकता को नास्तिकता । इसका अर्थ है अपरिष्कृत मन नास्तिकता है और परिष्कृत मन आस्तिकता है । तो मन के अपरिष्कार से परिष्कार की यात्रा ही नास्तिकता से आस्तिकता की यात्रा कही जा सकती है । परमात्मा ही जीवात्मा के श्रृंगारी है जो उसका गुणों के नौलखे हार से श्रृंगार करते हैं । भक्त की यात्रा आस्तिकता से सर्वोच्च आस्तिकता की यात्रा कही जा सकती है। थोडे परिष्कार से अधिक परिष्कार, अधिक परिष्कार से पूर्ण परिष्कार की यात्रा कही जा सकती है । यह मन जबतक अपरिष्कृत है तबतक वह थोडी आस्तिकता थोडी नास्तिकता के अंधेरे में जीता है ।

ईश्वर को आसानी से ढूँढने का मार्ग आस्तिकता है जो अन्तःकरण की निर्मलता, समर्पण और सद्गुणों की मात्रा पर निर्भर करता है । आस्तिकता भी अगर हिलती - डुलती रहेगी तो ईश्वर का प्रतिबिम्ब भी हिलता डुलता ही रहेगा और नास्तिकता में तो वह भी नहीं दिखाई देगा क्योंकि वे निर्मल जल के ऊपर की वह काई हैं जिसको हटाए बिना हम अपना प्रतिबिम्ब भी नहीं देख सकते । भक्त के लिए ईश्वर उसे प्रेरणा देनेवाली, उसे सन्मार्ग पर चलानेवाली, उसकी नकारात्मकता को छीननेवाली, उसकी प्रतिभा को तराशनेवाली किसी ऐसी अदृश्य शक्ति का नाम है जो उसके अंग - अंग में समायी हुई है । ईश्वर तो आनन्दमय स्वभाववाले हैं । जैसे बर्फ के पास बैठकर हम ठंडक पाते हैं क्योंकि ठंड उससे झड.ता रहता है ठीक उसी तरह ईश्वर के पास बैठकर हम सिर्फ और सिर्फ आनन्द पाते हैं क्योंकि वह सत् चित् आनन्दस्वरूप है । जिस तरह न तो बर्फ हमें पास बैठने के लिए बुलाता है न दूर करता है ठीक उसी तरह ईश्वर हैं । यह हमारी इच्छा है कि हम स्वयं को आस्तिक मानकर उनके पास बैठें या नास्तिक मानकर उनसे दूर रहें । परन्तु पास बैठने का और दूर रहने का परिणाम तो हमें मिलेगा ही इसमें कोई सन्देह नहीं है । नास्तिकता अनुमान है और आस्तिकता अनुभव है । अनुमान सत्य हो भी सकता है नहीं भी परन्तु अनुभव शत प्रतिशत सत्य होता है इसलिए हम बनें आस्तिक और ईश्वर का पता ढूँढते-ढूँढते अपना पता पाने की कोशिश करें क्योंकि सागर की एक बूँद और सागर अलग-अलग तो नहीं हैं ।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **जिंदगी को हम खेल-खेल में जीयें यानि तनाव मुक्त जीवन जीयें, यह बात तब होगी जब जीवन की समझ विकसित होगी ।नहीं समझ है तो जीवन में कभी इस तरफ किक मार दिए , कभी उस तरफ किक मार दिए। फुटबॉल की तरह बेतरतीब जीवन हो जाएगा। दिशा ठीक नहीं है तो दशा ठीक नहीं होगी। सहजता पूर्वक जीवन जीना ही जिंदगी का खेल होना कहलाता है ।यह बड़ी ही उच्चतम शिखर की बात है।**
- **सामान्य तौर पर जीवन की समझ विकसित होगी तो जीवन में दो चीज आएंगी-एक कला दूसरी कुशलता। जीवन की कला विकसित होनी चाहिए और कला के साथ-साथ कुशलता विकसित होनी चाहिए ।**
- **कला के दो परिणाम हैं -एक तो सौंदर्य और एक प्रसन्नता। किसी भी कला से दो अभिव्यक्ति होती है -एक तो कला देखने वाले का मन मोहती है, मन प्रसन्न होता है और दूसरा सौंदर्य निखरता है।जो भी कला है सौंदर्य निखारती है।एक और तीसरी बात होती है रचनात्मकता विकसित होती है , क्रिएटिविटी होती है कला में। इसलिए कहा जाता है जीवन जीने की कला यानी कलाकार की तरह जीवन होना चाहिए।**
- **कुशलता से क्षमता निखरती है, व्यक्ति क्षमतावान होता है।**
- **खेल भावना का मतलब है हर स्थिति में प्रसन्नता होनी चाहिए। खेल का सही अर्थ जानते हैं बच्चे, हर चीज में हंसता है,मस्ती करता है।**
- **शिशुवत् सरलता जिनमें है वह खेल मान सकते हैं जिंदगी को, यह स्थिति रहे तो उत्साह बना रहेगा।**
- **जिंदगी को सिर्फ काम समझेंगे तो हमेशा काम-काम दिमाग में चलता रहेगा ।तो एक समय जीवन बोझ लगने लगेगा। हां! काम को भी खेल समझते हुए करने पर बोझ नहीं लगेगा, उत्साह से भरे रहेंगे।**
- **पहले चरण में जीवन कुशलता है, दूसरे चरण में जीवन कला है, तीसरे चरण में जीवन क्रीड़ा है, खेल है। कुशलता से क्षमता, कला से सौंदर्य और क्रीड़ा से ईश्वरत्व विकसित होता है।**
- **धरती उन लोगों को बोझ समझती है जो जीने के मकसद पर विचार नहीं करते। जीवन को उसकी पूरी गुणवत्ता के साथ जीना है ,तो एक मकसद चाहिए ।यह हो तो डर, आशंकाएं आती भी है तो चली जाती है। फिर आप जीवन से प्रसन्न ही नहीं होते ,बल्कि आपका अस्तित्व दूसरों के लिए भी आरामदायक और प्रेरणादायक होता है।**
- **हमेशा यह सवाल रहा है कि जीवन को कैसे जीया जाए? जवाब कई हो सकते हैं, हमें खुद का सही जवाब खुद से तलाश करनी चाहिए। उस पर अंत तक चलने की कोशिश करनी चाहिए।**
- **आज जीवन का मकसद तीन पी यानि पे, प्रमोशन, और पेंशन हो गया है ।इसके जरिए तीन और पी-पोजीशन, पावर और प्रेस्टीज पाने में जुटे रहते हैं ।यह खोज हमें भीतर से खाली और खोखला करती रहती है।**
- **आज हम जैसे हैं उससे अधिक संस्कारी बनें, अच्छा बनें और सुखी रहें, यही जीवन की सार्थकता है। बस वह काम करें जो हमें आंतरिक तौर पर प्रसन्नता दे।**
- **जीवन का विरोधाभास यह है कि सब कुछ अनुकूल- प्रतिकूल अनुभवों को समेट लेने की क्षमता है, तो सहने का अभाव होने से बहुत जल्द वह प्रकट होने वाला छिछलापन भी है।तूफानों से लड़कर मंजिल तक पहुंचने का आत्मविश्वास है, तो तूफान के डर से नाव की लंगर खोलने जितना साहस भी नहीं है। सचमुच जीवन विचित्र है ।कभी हम जिंदगी जीते हैं तो कभी उसे ढोते हैं।**
- **संस्कार को बढ़ाने से जीवन का विरोधाभास समाप्त हो जाता है। नहीं तो कभी जीवन घड़ा जैसा है, कभी चलनी जैसा है ।कभी इसमें श्रेष्ठ की पूर्णता है, तो कभी बुराइयों के अनगिनत छिद्र भी हैं।**
- **संस्कार हमें मर्यादित करता है, जीवन का उद्देश्य अगर पता है तो हम हमेशा उत्साह से भरे रहेंगे।**

- कर्मफल से बंधे जीवन में, जिंदगी में कभी सुख, कभी दुख आते रहते हैं।
- एक ही चीज हमें जिंदगी को जीने लायक बनाती है और वह है खेल।
- भगवान कृष्ण का जन्म जेल में होता है ,पांच विकारों के जेल में श्री कृष्ण का जन्म होता है। पांच विकारों की सफाई के बाद पूर्ण पुरुष का जन्म होता है। जन्म के समय जेल का ताला खुल जाता है, मतलब सभी विकार खत्म। तभी भगवान का आगमन होता है।
- भगवान कहते हैं सब मेरे ऊपर छोड़ दो, आसक्ति रहित हो मतलब यह नहीं कि रिश्तों को छोड़ो या तोड़ो इसका मतलब है सभी रिश्तों में उन्हीं को देखो, उन्हीं की अनुभूति करो।
- भावना व्यक्तित्व का आधार है ,भावना से विचार बनता है ।भावना अंतःकरण में है। हमारे भाव उमड़ते हैं, देने को ,पाने को ।प्रेम देना -प्रेम पाना ,यह एहसास होता है। भावना में विक्षोभ, विचारों में द्वंद जो उठता है,उसका कारण है कि हम सब दुनिया में प्यार पाना चाहते हैं ,प्यार देना नहीं चाहते। अगर लेने में खुशी है तो देने में ज्यादा खुशी है। देंगे तो मिलेगा ही ।अगर हम देना सीख जाएं तो मन में गांठे नहीं होगी, भावना की गांठे नहीं रहेंगी ।
- आजकल जो रोग होते हैं वह भावनात्मक और वैचारिक ज्यादा है ।कारण रोग का यही है भावनाओं में विक्षोभ। पर विचारों में द्वंद जीवनी शक्ति का क्षरण करते हैं ।इसका इलाज है भक्ति।
- यदि हमारे अंदर ईश्वर भक्ति पैदा हो जाए और कहीं विराट से तृप्ति महसूस करने लगें तो बहुत कुछ भला हो सकता है,हमारे सेहत का और संसार का।
- कृष्ण का आकर्षण नित्य है। आकर्षण के साथ आनंद है ।बस समर्पण की जरूरत है। अहंकार का विसर्जन ही समर्पण है।

जिज्ञासा

प्रश्नः- अगर कोई साधारण व्यक्ति भक्ति में लीन होकर ईश्वर की खोज में निकलता है तो घर वाले, समाज वाले उस पर आरोप लगाते हैं कर्म के डर से संत बन गया, साधु बन गया ।लेकिन वही घर वाले, समाज वाले यह बात भगवान बुद्ध को, महावीर जैन को क्यों नहीं बोलते? वह भी तो अपनी पत्नी और बच्चे के प्रति कर्म नहीं निभाए। कर्म का प्रावधान एक के लिए बना है या सब के लिए?

उत्तरः - एक समय यह बात मेरे सामने भी पूछी जाती थी। मैंने मध्यम मार्ग अपनाया। सांसारिक जीवन में भी सफल और आंतरिक जीवन में भी सफल होने की कोशिश करें। बचपन में मुझे यह बातें भली-भांति समझ में आ गई ताकि घर वाले परेशान ना हो। जहां तक आपने प्रश्न पूछा है तो बुद्ध को कौन कहेगा? बुद्ध के घर वाले। महावीर को कौन कहेगा? महावीर के घर वाले। उनके घर वालों ने नहीं कहा होगा, यह कैसे पता चला आपको? परिवार और समाज दो चीजों से प्रभावित होता है- एक सफलता, एक प्रतिष्ठा। पर मजे की बात है अगर आप सफल और प्रतिष्ठित होने के लिए कुछ करेंगे तो आप सफल और प्रतिष्ठित नहीं हो पाएंगे ।सफलता और प्रतिष्ठा फल है कर्म नहीं ।इसलिए जो सिर्फ सफलता और प्रतिष्ठा के बारे में सोचता है उसको सफलता और प्रतिष्ठा नहीं मिलती। जो सचमुच में भक्ति के बारे में सोचता है उसे संसार की टीका- टिप्पणी की चिंता नहीं रहेगी। ध्रुव और प्रहलाद तो बच्चे ही थे ,शंकराचार्य भी तो बच्चे ही थे उनको कोई परवाह नहीं थी। शंकराचार्य 8 साल की उम्र में घर छोड़े थे। जो अपनी धुन में रम गया वह रम गया। बुद्ध जब पैदा हुए थे तो अचित मुनि आए थे। उन्होंने अपनी जटाओं से उनका पैर पोंछा था । यह बहुत विशिष्ट आत्मा हैं इनके दर्शन के लिए ही हम जिंदा हैं अब तक ।बड़े होकर यह बुद्ध बनेंगे, महात्मा बनेंगे, लेकिन उस समय तक के लिए हम जीवित नहीं रहेंगे यह मेरा दुर्भाग्य है ।लेकिन शुद्धोधन नहीं माने, उन्होंने कहा- नहीं !मैं तो अपने बच्चे को चक्रवर्ती सम्राट बनाऊंगा। साधु-सन्यासी क्या मतलब होता है? उन्होंने सिद्धार्थ के महल में एक भी सफेद बाल वाले को नहीं रखा उनकी सेवा के लिए ,टहल- चाकरी के लिए। पर जिसको भक्ति करनी है उसे कोई रोक नहीं सकता। तो हमारे जीवन का केंद्र ,जीवन का स्रोत न हिंदू का है, न मुसलमान का, हमारा स्रोत है परमात्मा का ,परमेश्वर ही हमारा उद्गम है। वही हमारा गोत्र है, वही हमारी जाति है , कुल है, वही सब कुछ है। तो परमेश्वर की ओर जाने का मतलब है अपने उद्गम की ओर जाना। यह जो यात्रा है हमारी अंतर यात्रा है। तो भगवत प्राप्ति में बाहरी कोई बाधा नहीं है और कोई सहयोग भी नहीं है ।अपनी अंतरात्मा स्वयं सहयोग ढूंढती है और स्वयं ही पा लेती है। तो अपनी पढ़ाई लिखाई करिए, अपना काम करिए और अपनी अंतर यात्रा जारी रखिए।

प्रश्नः- पूरी दुनिया में या पूरे संसार में, सबसे श्रेष्ठ और अति सुन्दर क्या है?

उत्तरः - जीवन, सबसे श्रेष्ठ ,सबसे सुंदर जीवन, इस जीवन को जानें और पहचानें और इसको अच्छे से जीयें । सारी सुंदरता और सारे सौंदर्य की सृष्टि, आपके इर्द-गिर्द और आपमें होगी। तो जीवन से ज्यादा दुनिया में और कुछ सुंदर नहीं है और इस जीवन में सब कुछ है।

प्रश्नः- क्या कभी भी संसार से अच्छाई का अंत हो सकता है?

उत्तरः - नहीं और बुराई का भी नहीं, अच्छाई और बुराई कम या ज्यादा हर युग में रहती है,जब अच्छाई ज्यादा बढ़ जाती है, बुराई कम पड़ जाती है, तो हम कहते हैं सत्य युग यानी श्रेष्ठ युग और बुराई बढ़ जाती है और अच्छाई कमतर हो जाती है तो हम कहते हैं घोर कलयुग चल रहा है। यहाँ कोई चीज़ कभी मिटती नहीं है।

प्रश्नः- कलयुग के बाद दोबारा सतयुग होगा, तो क्या फिर से नृसिंह अवतार लेंगे भगवान?

उत्तरः - एक बात समझिए आप स्वयं भगवान के अवतार हैं, ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुखराशि। सभी जीवात्मा परमात्मा का अंश है। आप ये पहचानिये कि आप स्वयं परमेश्वर हैं, उपनिषद हमें ये बार-बार परिचय कराता है कि आप परमात्मा हैं। उपनिषद् तो यही कहता है कि जिस भगवान की आप खोज कर रहे हैं वो आपके हृदय गुफा में अवस्थित है। तो आप किसी अवतार की प्रतीक्षा मत करिये, उनको आना है अगर प्रकृति की कार्ययोजना

में होगा, प्रकृति के कार्य विधान में होगा, तो आ जाएंगे, नहीं आना होगा तो नहीं आएँगे। देखिए कृष्ण आये अवतार बनकर, दुर्योधन को समझ में आया क्या? दुशासन को समझ में आया क्या? धृतराष्ट्र को समझ में आया क्या? किसी को नहीं आया। धृतराष्ट्र क्या बोला-ये कुंती का भतीजा कृष्ण नहीं होता तो कुछ नहीं होता, ये सारा नाश करा देगा, यही सारी फसाद की जड़ है। युधिष्ठिर मेरा भतीजा तो बहुत ही समझदार है, वो तो जंगल जाने के लिए तैयार था, ये कुन्ती का भतीजा सारी फसाद का जड़ है। अब बताइए क्या फायदा हुआ अवतार का? धृतराष्ट्र के लिए, दुर्योधन के लिए। अच्छा ये बताइए राम आए, रावण को समझ में आ गया क्या? खरदूषण को समझ में आ गया क्या? बाली तो इंद्र की संतान था, मरते-मरते उसको समझ में आ गया। मूल बात यह है कि हम एक ऐसा अंगारा हैं जिसके ऊपर राख जम गईं है। हमें उस राख को हटाना है, वो चमक, वो दमक, वो ज्वाला, वो अग्नि स्वतः प्रकट हो जाएगी। इसलिए प्रतीक्षारत मत रहिए कि नृसिंह अवतार लेंगे। जो भी भगवान की कृपा का अवतरण होता है वो हमारी चित्त भूमि में होता है। पुकारेंगे तो आप का भी कल्याण हो सकता है।

प्रश्नः- क्या सिर्फ अन्न दान ही महादान है?

उत्तरः - नहीं, विद्या दान भी महादान है। विद्या दान का मतलब है उचित मार्गदर्शन । विद्या वो है जो व्यक्ति का व्यक्तित्व बनाती है। जीवन को गढती और संवारती है। अन्न दान को इसलिए महादान माना गया, क्योंकि जीवन का रक्षण पोषण अन्न से होता है, जीवन अगर बचेगा, तो बहुत कुछ आप कर लेंगे। इसलिए अन्नदान को महादान कहा जाता है। जीवन सुरक्षित रहेगा।

प्रश्नः- सच्चा ज्ञान हो तो क्या हर प्रश्न का उत्तर मिल सकता है?

उत्तरः - पहली बात कि आप जैसे हैं, वैसे ही आपके प्रश्न होंगे और जैसे आपके प्रश्न होंगे ,वैसे आपके उत्तर मिलेंगे। यह ज्ञान कहाँ प्रकट होता है? मनोभूमि में प्रकट होता है, मन में ही तो ज्ञान होता है,चित्तभूमि में ही तो ज्ञान प्रकट होता है। तो जैसा मन होगा, वैसा ज्ञान प्रकट होगा। अगर मन में कालापन है तो ज्ञान में उजलापन कहाँ से आ पाएगा? इसलिए अपने यहाँ प्राप्ति के लिए एक ही साधना बताई गई है, चित्त को माँजो, धोवो, जितना जीवन साफ होगा, उसी अनुरूप आपको ज्ञान हो जाएगा। उल्टा नाम जपत जग जाना, वाल्मीकि भये ब्रह्मसमाना। राम-राम नहीं, मरा-मरा जपते जपते रत्नाकर डाकू से वाल्मीकि ऋषि हो गये, वे तो अशिक्षित थे, पढ़े-लिखे नहीं थे, जंगल में रहते थे। तो वाल्मीकि ने कौन सी शिक्षा ली? कोई फॉर्मल एजुकेशन प्राप्त नहीं की और आदिकवि कहलाये, कैसे? चित्त को जब शुद्ध किया, अचानक उनके हृदय से काव्य फूट पड़ा। तो बाल्मीकी का ज्ञान कहाँ फूटा? शुद्ध चित्त से।

कहने का तात्पर्य यह है कि ज्ञान चित्त भूमि में प्रकट होता है, जितना आपका चित्त अच्छा, उतना आपका ज्ञान अच्छा, जितना आप सच्चे, उतना आपका ज्ञान सच्चा। अगर आप चित्त को धोते चले जाएँ, मांजते चले जाएँ, परमात्मा प्रकट हो जाएंगे। सच्चे ज्ञान के लिए आपको भी सच्चा बनना पड़ेगा।

स्वामी विवेकानंद से सिस्टर निवेदिता बहुत सारे सवाल पूछा करती थी, वहीं सिस्टर क्रिस्टीन कोई सवाल नहीं करती थी। एक दिन विवेकानंद ने पूछा कि तुम्हारे अंदर कोई प्रश्न नहीं है? क्रिस्टीन ने कहा कि प्रश्न तो उठते हैं, पर मुझे अंदर से उत्तर मिल जाता है। ये क्या है? चित्त की शुद्धि। अगर आप सन्मार्ग पर चलना शुरू करते हैं, एक-एक कदम बढ़ाते चलेंगे, उतना-उतना प्रकाश जीवन में आता चला जाएगा।

अज्ञान क्या है? और ज्ञान क्या हैं? साधना क्या है? और बाधा क्या है? आसक्ति और अहंकार अज्ञान है, बाधा है। बहुत सारे काम जो हमें नहीं करना चाहिए हम आसक्ति और अहंकार के कारण कर बैठते हैं।आसक्ति और अहंकार को अगर रोक लेंगे तो मार्ग खुलता चला जायेगा। यही मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता है, बाधा है। यहीं पर झूठा ज्ञान हो जाता है, भ्रम पैदा हो जाता है। कौन सही कौन गलत? जो उचित है वो सही, जो अनुचित है वो गलत। इतनी समझ विकसित करनी पड़ेगी।

प्रश्नः- अनुराग जैन जो चाइना में रहते हैं, वो हमारे व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़े हुए है, अभी 28 जुलाई को सुदूर गांव में हमलोग अलग अलग घरों में 24 कुंडीय यज्ञ कराते हैं, पर्यावरण संतुलन के लिए पौधे बांटते हैं और

लगवाते हैं, अखंड ज्योति पत्रिका यज्ञ करने वालों को देते हैं, दीवार पर सद्वाक्य का लेखन करते हैं, उसी में सुमन का लेखन करते हुए एक वाक्य का चित्र वॉट्सऐप पर था, गायत्री प्राणों की रक्षा करती है। उसको पढ़ कर अनुराग जैन कहते हैं-अरुण जी,आई थिंक, गायत्री परिवार सेव द सोल, नॉट द लाइफ, व्हाट डू यू थिंक?

उत्तर: - प्राण बचेगा तभी तो हम आत्मा का ज्ञान प्राप्त करेंगे, अन्न दान को महादान क्यों कहा गया? जीवन बचेगा तभी तो आप ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे। प्राण रहेगा तो जीवन रहेगा। जीवन बचेगा तो आत्मा बचेगी और आत्मा बचेगी तो जीवन बचेगा। क्योंकि आत्मा जब अपने को अभिव्यक्त करती है तो जीवन के रूप में अभिव्यक्त करती है। आत्मा का प्रकटीकरण है जीवन। गय मतलब प्राण, त्री मतलब त्राण करने वाली, गायत्री प्राण का त्राण करती है। प्राण-पखेरु उड़ गए यानि जीवन खत्म हो गया। प्राण हो, जीवन हो ,आत्मा हो, ये बचता कैसे है? और नष्ट कैसे होता है? अज्ञान से नष्ट होता है और ज्ञान से बचता है। और गायत्री तो ज्ञान की देवी है। ज्ञान तो क्षण में हो जाता है, पल में हो जाता है, जैसे कमरे में अंधेरा है, अचानक लाइट जली और सब कुछ साफ-साफ दिखने लगता है, ये है ज्ञान, कमरा पहले भी वैसा ही था, लेकिन आपको अनुभव हुआ लाइट जलने से । वैसे ही विश्वामित्र को, सब कुछ तो वैसा ही था, वो जो सवेरे का उगता हुआ सूरज था, चमका कहाँ? उनके हृदय में। तो इस तरह से विश्वामित्र को गायत्री प्राप्त हुई, सुबह-सुबह सूर्य का अर्घ्य दान दे रहे थे, उगते हुए सूरज को देख कर, एक क्षण में उनके अंदर प्रकाश भर गया, सविता देवी गायत्री के रूप में प्रकट हो गई। यही जो प्रकाश है, यही है तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो न प्रचोयदयात्। तो ज्ञान गायत्री है, ज्ञान से प्राण संरक्षित होता है, ज्ञान से आत्मा प्रकाशित होती है, ज्ञान से दुर्गुणों का विनाश होता है, ज्ञान से सद्‌गुणों की प्राप्ति होती है, और गायत्री ज्ञान है। हर चीज़ मिल जाती है जब आपको ज्ञान होता है, इसके सबसे बड़े उदाहरण विश्वामित्र हैं । गायत्री मिलने से पहले वो तप तो कर रहे थे, पर भटक रहे थे, कभी मेनका में भटक रहे थे, तभी त्रिशंकु में भटक रहे थे, कभी वशिष्ठ ऋषि में भटक रहे थे, लेकिन जब उनके अंदर का सूर्योदय हुआ, तो उन्हें लगा कि हम इनके पीछे क्यों पड़े हैं, हम जबरदस्ती त्रिशंकु को स्वर्ग दे दिए, हमारे पास ऊर्जा तो थी, ऊर्जा के बल पर ही त्रिशंकु को स्वर्ग भेजा । तप की ऊर्जा तो थी पर ज्ञान नहीं था, गायत्री मिली फिर ज्ञान हुआ, गायत्री ने उनको स्थिरता दी और जब स्थिरता मिली, आसन पर विराजमान हुए, तो ज्ञान अपनी पराकाष्ठा पर पहुंचा । जो चिनगारी फूटी थी, जो किरण उदय हुई थी, वो समग्र सूर्य बनकर प्रकाशित हो गया, और जब समग्र सूर्य बनकर ज्ञान प्रकाशित हो गया तो वो ब्रह्मर्षि हो गए। गायत्री से जब ज्ञान की प्राप्ति होती है, तो संपूर्ण जीवन, आप आत्मा कह लें, प्राण कह लें, जीवन कह लें, सब सुरक्षित और संरक्षित हो जाता है। कमरे में जब बल्ब जलेगा, तो एक चीज़ थोड़े ही प्रकाशित होगी, सभी चीजों में उजाला आ जाएगा। आप खाना खायेंगे तो सिर्फ पेट में थोड़े ही जायेगा, हाथ में भी जाएगा, पैर में भी जाएगा, सिर में भी जायेगा। उसी तरह रोग है, लगता है सिर में दर्द है, पर पूरा शरीर उससे आक्रांत हो उठता है। यानि शरीर में भोजन और रोग दोनों व्याप्त हो जाते हैं, भोजन के अमृत का पोषण भी व्याप्त हो जाता है, रोग का विष भी व्याप्त हो जाता है, उसी तरह से जो ज्ञान यानि गायत्री जब प्राप्त होता है, तो सब व्याप्त हो जाता है।

प्रश्न:- परीक्षा से पहले सब कुछ याद रहता है लेकिन परीक्षा में सब गलत लिख कर आ जाते हैं, कैसे सुधार करें?

उत्तर: - पहली बात है किसी चीज़ को याद रखने की जरूरत नहीं है, रटा हुआ चीज़ हमेशा लोग भूल ही जाते हैं। परंतु जिस चीज़ को समझा गया है, जिसका कॉन्सेप्ट क्लियर है, वो चीज़ कभी नहीं भूल सकते। अपनी विषयवस्तु को समझें, उसके मूल-मूल बिंदु को याद रखें, उसके मूल बिंदु को फैब्रिकेट करें, आप देखेंगे कि उसके बाद वो सारी चीजें जीवन भर याद रहेंगी। पढ़ने की, प्रस्तुत करने की, लिखने की तकनीक होती है। पहले आपके दिमाग में बातें समझ में आ जानी चाहिए, अगर समझ में नहीं आया, सिर्फ रट लिए, आप गलत लिखकर ही आयेंगे। जिनसे आपका जुड़ाव हो गया ,उनको आप कभी नहीं भूलते, उनकी बातें कभी दिमाग से नहीं हटती, उसी तरह दिमाग में जो चीजें समझ में आ गई है, उसको आप कभी नहीं भूलेंगे। जिनसे आपका जुड़ाव नहीं है, वो बोझ की तरह लदी है, वो चीज़ जरूर भूल जाएंगे आप। जो चीज़ आपके पाठ्यपुस्तक में है, उसकी क्या उपयोगिता है, ज़िंदगी में उनका क्या मतलब है, उसको पढ़िए, समझिए, फिर बातें स्पष्ट रहेंगी । समझ करके उसको आप सोचिए फिर लिखिए, फिर आप देखिए कभी नहीं उसको भूलेंगे।

प्रश्न:- क्या गायत्री मंत्र सभी जाति और धर्म के लोग कर सकते हैं?

उत्तर: - हाँ ! क्यों नहीं, जाति धर्म से क्या मतलब है गायत्री मंत्र का, अच्छा ये बताइए, सूर्य किसी जाति धर्म को रोशनी देता है क्या? गायत्री मंत्र तो सूर्य भगवान का मंत्र है, गायत्री का देवता सविता है। सूर्य भगवान किस जाति-धर्म को मानते हैं? सूर्य भगवान की ऊर्जा और प्रकाश सभी जाति और धर्म के लिए है। जाति-धर्म तो छोड़िए, पशु-पक्षी, जीव-जंतु, वृक्ष-वनस्पति सबके लिए हैं या नहीं? एकदम हैं, जड़ चेतन सभी के लिए है। तो फिर जाति-धर्म से क्या मतलब, क्या लेना-देना? कुछ लोग तो कहते हैं काकभुषुंडी जब मानव शरीर में थे, तो वे भी गायत्री मंत्र जपते थे,कौआ होने पर उन्हें ब्रह्मज्ञान हो गया, फिर गायत्री मंत्र जपने की आवश्यकता नहीं रही, लेकिन पिछले जन्म की गायत्री साधना उन्हें ब्रह्मज्ञान तक ले गई। गायत्री माता की स्तुति है न, ओम स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयान्ताम पावमानि द्विजानाम आयु, प्राणम्, प्रजाम्, पशुं, कीर्तिं, द्रविणं ब्रह्मवर्चसम मह्यं दत्त्वा ब्रजत ब्रह्मलोकम, तो गायत्री माता की स्तुति से हम ब्रह्मलोक तक पहुँच सकते हैं।

प्रश्न:- अपने बारे में कैसे पता लगाएं कि मैं क्या हूँ?

उत्तर: - ये छोड़ो, पहले अपने बारे में ये पता लगाओ कि मैं क्या नहीं हूँ। जैसे प्याज की परत छीलते जाओगे, ये नहीं, ये नहीं अंत में पता चल जाएगा कि मैं क्या हूँ। मैं क्या हूँ इसे छोड़ो, मुझे जीवन में क्या करना है पहले इसका पता लगाओ, जब क्या करना है ये पता चल जाएगा, जब स्थिर होकर बैठोगे, तो ये भी पता चल जाएगा कि तुम क्या हो। जब मन का अंधेरा घटता है, तब पता चलता है तुम क्या हो, जब मन का अंधेरा घटता है, तब पता चलता है कि क्या कर्तव्य है, अंधेरा और घटता है, प्रकाश और बढ़ता है तब सब कुछ पता चल जाता है, दीया जलाएंगे तभी तो पता चलेगा, अंधेरे में क्या पता चलेगा? जब दीया जलाओगे तो पता चल जाएगा कि तुम क्या हो।

प्रश्न:- क्या सत्य बोलना पाप है और ज्यादा बोलना पाप है?

उत्तर: - सत्य बोलना और ज्यादा बोलना पाप नहीं है। लेकिन सत्य कब बोलो, कम कब बोलो, ये जानना जरूरी है। सत्य बोलने के लिए और बोलने के लिए विवेक की आवश्यकता है। मुंहफट मत बनो। सत्यम् ब्रूयात, प्रियम् ब्रूयात, माब्रूयात सत्यम् अप्रियम् । सत्य बोलो, प्रिय बोलो, और अप्रिय सत्य मत बोलो। संस्कृत में मा मतलब नहीं होता है। कुछ लोग सत्य बोलते हैं, सही बोलते हैं पर सही समय पर नहीं बोलते, सही तरीके से नहीं बोलते, इसलिए गलत ठहराए जाते हैं। इंटेंशन ठीक है परन्तु इम्प्लिमेंटेशन ठीक नहीं है तो सब गड़बड़ है। सही समय पर, सही तरीके से बोलें तो सामने वाले को बुरा नहीं लगेगा, आपकी बातों को वो ग्रहण कर लेंगे आसानी से।

प्रश्न:- हमें गाय दान करना चाहिए या गाय पे दान करना चाहिए? क्योंकि आज के समय में गाय दान करना खतरे से खाली नहीं रहा।

उत्तर: - खतरा क्यों है? आप कहेंगे स्लाउटर हाउस जाता है, जहाँ गाय को काटा जाता है, कोई दुधारू गाय को स्लॉटर हाउस नहीं ले जाता। हाँ !एक बात हमें भली-भांति समझनी चाहिए कि दान सुपात्रों को, सत्पात्रों को करनी चाहिए। गाय का मतलब गाय ही होता है। कुपात्र-सुपात्र का विचार करके दान देना चाहिए। पूज्य गुरुदेव ने कहा है-किसने कितना दान दिया ये महत्वपूर्ण नहीं है, वरण किसके हाथों में, किस उद्देश्य के लिए दान किया, ये महत्वपूर्ण है। दान देने वालों का शुद्ध कर्म और दान लेने वाले का शुद्ध कर्म, ये विचार करके दिया जाता है। यहाँ इस गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में भी लोग दान करते हैं, जरूरतमंदों को खाना खिलाते हैं, रोगियों की सेवा करते हैं, फ्री मेडिकल कैंप भी लगाते हैं, झुग्गी-झोंपड़ी के बच्चे और बच्चियों को मुफ्त शिक्षा भी देते हैं, साल में कई बार कपड़ा, कंबल भी बांटते हैं। लेकिन हम ऐसे जगह दान नहीं करें, जहाँ पैसों का सही उपयोग नहीं होता हो, जहाँ अहंकारी और विलासी लोगों का समूह हो, वहाँ हम पाप ही बटोरेंगे। जब ये शक्तिपीठ में भी अहंकारी और विलासी लोग रहने लगे, आप यहाँ भी दान मत करिए। आदमी को ऊर्जा वहाँ खर्च करनी चाहिए जहाँ उपयोगी हो। कोई बीमार है, दुख-तकलीफ में है, भोजन नहीं मिल रहा है, वहाँ खर्च करें, वहाँ खपें। भावना ठीक है, भावुकता ठीक नहीं है। मनुष्य को भगवान ने एक चीज़ दिया है, वह है विवेक, ये विवेक का मतलब होता है अलग-अलग करना, उचित क्या है अनुचित क्या है, सही क्या है

गलत क्या है, अच्छा क्या है बुरा क्या है। ये आप कर सकते हैं तो ही दान करें, सत्कर्म करें। दान हमेशा अच्छा होता है, पर कब और किसको? ये तो व्यक्ति तय करेगा ना, कोई जेनरलाइज नियम तो है नहीं, हम बोलने में भले ही सामान्यीकरण करते हैं, पर विशेष परिस्थितियों में उसका आप विशेष विचार करें।

अगस्त माह की गतिविधियाँ

दिनांक 4/ 8 /2024,(रविवार) को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में रविवासरीय सत्र का शुभारंभ रुद्राभिषेक, हवन यज्ञ, विभिन्न संस्कारों से हुआ । साथ ही व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का शुभारंभ गान, ज्ञान और ध्यान से हुआ। इस क्रम में गायत्री शक्तिपीठ ,सहरसा के ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल जी ने सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि - कामना, इच्छा और चाहत पूरी नहीं होती। भक्ति भाव से किया गया कर्म ही पूरा होता है भोग विलास का जीवन जरूरी नहीं । जरूरी है तो सादा जीवन उच्च विचार। जीवन में समझदारी जरूरी है । जीवन को सहजता पूर्वक जीना चाहिए ,दबाव में नहीं। जब जीवन में समझ विकसित हो जाती है तब जीवन में कला आती है जो जीवन को सहजता पूर्वक जीने में हमारी सहायता करती है और जब कला निखरती है तब सौंदर्य निखरता है। जब जिंदगी की समझ विकसित होती है कला और कुशलता के साथ तब जीवन में रचनात्मकता विकसित होती है और कुशलता से क्षमता निखरती है फिर कर्म में कुशलता और कला भी आती चली जाती है । सामान्य जीवन में जीवन को खेल नहीं समझा जा सकता। अगर जीवन खेल बन जाती है तो जीवन में फिर कला और सौंदर्य निखरता है । परम पूज्य गुरुदेव के अनुसार: शिशुवत सरलता है तो जिंदगी खेल बन जाती है । अगर जीवन ऐसा हो जाता है तो जीवन हमेशा हर्ष, उत्साह से भरा रहता है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री विनीत सबु जी चेन्नई से, श्री प्रकाश कावरा जी और अर्चना कावरा जी जयपुर से उपस्थित थे ।मुख्य अतिथिगण के द्वारा भी सत्र को संबोधित किया गया। इस क्रम में श्री प्रकाश कावरा जी ने कहा - कि श्री अरुण कुमार जायसवाल जी हमारे जीवन में गुरु के रूप में है और उनके मार्गदर्शन में हमारा जीवन आध्यात्मिकता की ओर मुड़ा । इस क्रम में श्रीमती अर्चना कावरा जी ने कहा - गायत्री शक्तिपीठ की व्यवस्था श्री अरुण जी के मार्गदर्शन में बहुत ही सुचारू रूप से चल रहा है। इस क्रम में विनीत साहू जी ने संबोधित करते हुए सत्र को कहा- मैंने जो भी सीखा है वह श्री अरुण कुमार जी के द्वारा ही सीखा । मेरी जिंदगी आध्यात्मिकता की ओर मुड़ी तो वह अरुण कुमार जी के द्वारा ही । उन्होंने कहा - जीवन मौज मस्ती के लिए नहीं अच्छे कर्म करने के लिए होते हैं।

गायत्री परिवार, सहरसा द्वारा प्रतिदिन मानव सेवा....

दिनांक 11 अगस्त 2024 (रविवार) को सहरसा जिला अंतर्गत पंचगच्छिया प्रखंड के पटोरी स्थित दुर्गा मंदिर प्रांगण में प्रमंडलीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमे सहरसा,सुपौल और मधेपुरा जिले के परिजन शामिल हुए परिजनों को संबोधित करते हुए डॉक्टर अरुण कुमार जयसवाल जी ने कहा हम लोग प्रत्येक तीन महीने में गायत्री परिवार द्वारा किए जाने वाले कार्यों की समीक्षा बैठक करते हैं एवम आगे की कार्य योजना बनाते हैं।गुरुदेव का संकल्प है, धरती पर स्वर्ग का अवतरण। हम सभी को गुरुदेव के विचारों को अधिक से अधिक घरों तक पहुंचाना हैं। जिला के प्रतिनिधियों ने अपने अपने जिले में विगत महीनों में किए गए कार्यों का प्रतिवेदन समर्पित किया। शांतिपाठ के साथ बैठक का समापन हुआ।

गायत्री परिवार, सहरसा द्वारा प्रतिदिन की तरह आज भी मानव सेवा....

आज दिनांक 11/08/2024 (रविवार)को गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ।सत्र को संबोधित करते हुए डॉo अरुण कु० जायसवाल जी ने कहा-खर्चीली शादी हमें दरिद्र और बेईमान बनाती है अगर सचमुच में लोभ हमारे अंदर से चला जाय तो हमारा व्यक्तित्व निखर जाएगा उन्होंने कहा-तमोगुणी व्यक्ति के लिए जीवन बोझ है रजो गुणी व्यक्ति के लिए जीवन एक अवसर है और सतो गुणी व्यक्ति के लिए जीवन एक रहस्य है ।धरती उनलोगों को बोझ समझती है जिनके पास कोई लक्ष्य नहीं होता | जीवन में यदि हम डटे हों तो डर आएंगी और चली भी जाएगी किन्तु हम उस परिस्थिति में भी विचलित नहीं होंगे। यदि हमारा जीवन उद्देश्यपूर्ण हो तो हम स्वयं के साथ साथ दूसरों के लिए भी लाभदायक, आरामदायक सिद्ध होंगे। प्रेरणादायक सिद्ध होंगे। जीवन मे हर प्रश्नों के हल स्वयं ही ढूंढकर उसपर अंतिम तक चलते रहने में ही जीवन की सार्थकता है ।लेकिन आजकल लोगों के लिए जिंदगी सिर्फ पेय, प्रमोशन,पेंशन, पोजीशन, पावर और प्रेस्टीज तक ही सिमट कर रह गई है और ऐसा जीवन ही हमें अंदर से खोखला बनाती चली जाती है। हमें अपने जीवन मे नैतिकता, सुसंस्कार को विकसित करना चाहिए ।कहा माता-पिता को अपने बच्चों मे अच्छे संस्कार देना चाहिए ।अच्छे संस्कार हम तब ही दे पाएंगे जब हम स्वयं संस्कारी हों ।अगर हम अपने जीवन मे उत्साहित हैं, सकारात्मक हैं तो सफलता निश्चित रूप से मिलेगी। जीवन मे उत्साहित रहने पर जिंदगी खेल बन जाती है और तब हमे अपनी जिंदगी बोझ नहीं लगती। जीवन की सार्थकता तब हमे समझ आने लगती है ।इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल, युवा मंडल और युवती मंडल मौजूद थे।

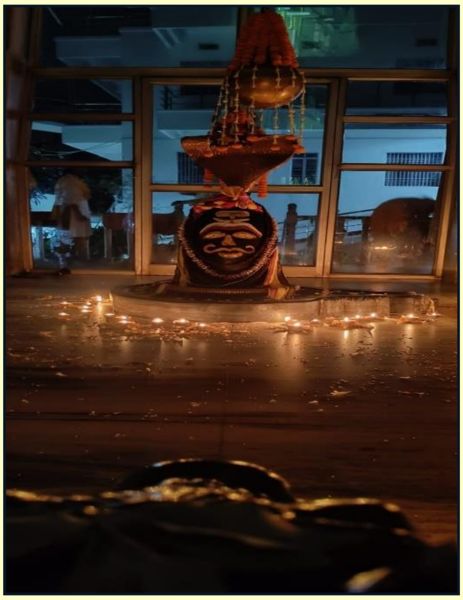

श्रावण मास के चतुर्थ सोमवार को संध्या में प्रगेश्वर महादेव का कार्यक्रम श्रृंगार, भजन एवं आरती के साथ संपन्न हुआ।

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के द्वारा गायत्री गीतमाला भाग 12 की शूटिंग पिछले तीन दिनों से जो चल रही थी आज संपन्न हुई । शूटिंग नया बाजार, जयप्रकाश उद्यान ,गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के परिसर में संपन्न हुई ।12वीं सीरीज में 11 प्रज्ञा गीतों में ऐसे भजन है जो हमें श्रद्धा भक्ति के भाव से उत्प्रोत तो करते ही हैं साथ ही समर्पण और सुमिरन की ऊर्जा को भी प्रदान करते हैं । मां तेरे चरणों में हम शीश झुकाते हैं श्रद्धा पूरित होकर दो अश्रु चढ़ाते हैं ,डाल नजर माना इंसानियत कितनी बुराइयां है, श्री राम जी का कीर्तन हम रोज गाएंगे आवागमन के चक्र से हम छूट जाएंगे , एक दिन ही जी मगर इंसान बनकर जी, करते जो सहकार सफलता उनके चेरी है। इसके अलावा संस्कृत में गायत्री अष्टकम और गुरु अष्टकम का भी निर्माण हुआ है जिसको स्वर दिया श्रीमती अभिनव शेट्टी जायसवाल ने एवं अन्य गीतों को स्वर दिया डॉ अरुण कुमार जायसवाल, कृतिका गौतम, पूनम एवं प्रखर ने। नवरात्रि में इस म्यूजिक एल्बम के रिलीज होने की उम्मीद है। फिल्मांकन में प्रेम शंकर भगत मॉडर्न वीडियो मिक्सिंग लैब के कैमरामैन रोशन कुमार, आनंद झा, गोलू कुमार। पूर्णिया से आए अमोल कुमार, गोविंद जी, सूरज की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही। शूटिंग में स्वरांजलि की छात्राओं और गायत्री शक्तिपीठ के युवा मंडल - युवती मंडल ने हिस्सा लिया। स्वरांजलि की निर्देशिका प्रोफेसर भारती गौतम ने सभी गीतों की कोरियोग्राफी करवाई। शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान में अब तक 100 से अधिक प्रज्ञा गीतों का लेखन कर स्वरबद्ध किया जा चुका है और सबका शूटिंग भी किया जा चुका है ,इसमें सभी स्थानीय कलाकारों ने हिस्सा लिया। यह सारे गीत हमारे अंदर प्रज्ञा अर्थात विवेक को जगाते हैं। गीत का लेखन डॉक्टर लीना सिंहा और शांतिकुंज हरिद्वार की ओर से किया गया।

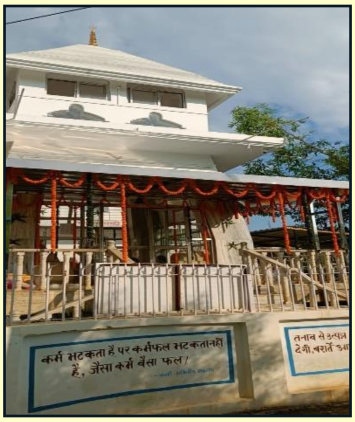

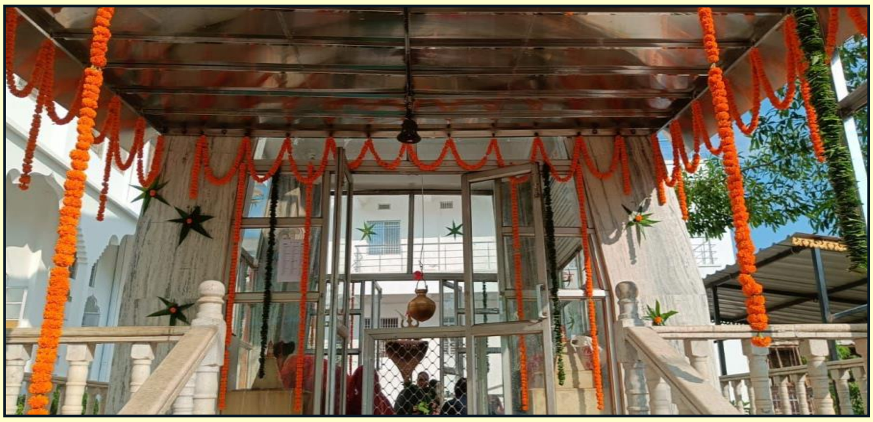

श्रावण मास का प्रातः क़ालीन दृश्य, प्रागेश्वर महादेव मंदिर, गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

श्रावण पूर्णिमा के पूजन का दृश्य

श्रावण मास के पाचवें सोमवार की संध्याकालीन प्रगेश्वर महादेव जी का श्रृंगार का क्रम भजन एवं आरती के साथ संपन्न

दिनाक19/08/2024 कृष्ण जन्मोत्सव :

इंसान की कल्पनाशीलता कहे या शिव में कृष्ण को देखने की चाहत या कृष्ण में शिव को देखने की आकांक्षा...यह ठीक उसी तरह से है जैसे ईश्वर में मनुष्य को ढूँढना या फिर मनुष्य में ईश्वर को खोजना...

प्रश्न आज भी है राम और कृष्ण मनुष्य से ज़्यादा ईश्वर थे या ईश्वर से ज़्यादा मनुष्य ?

जन्म का समय नहीं था, ये समय का जन्म था ... गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में जन्मोत्सव में उत्तर प्राप्त करते भक्त...जब भगवान गीता में अर्जुन को कहते है- मैं काल हूँ...इसलिए महाकाल में काल को चित्रित करता जिज्ञासु...

कृष्ण जन्मोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम करते स्वरांजलि के कलाकार

गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान में शिक्षण प्राप्त करते छात्रगण

नर सेवा - नारायण सेवा के मार्ग पर प्रतिदिन चलता गायत्री परिवार, सहरसा

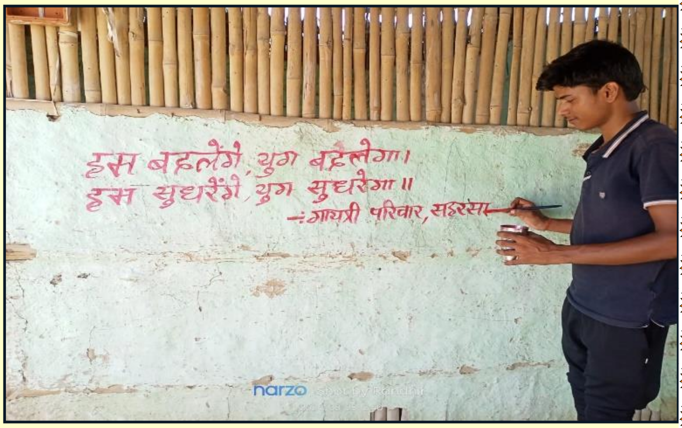

प्रत्येक महीना के अंतिम रविवार की तरह आज दिनांक 25/07/2024 (रविवार) को सहरसा जिला के बख्तियारपुर प्रखंड अंतर्गत हिन्दुपुर गांव के 27 अलग- अलग नए घरों में देव स्थापना एवं एक एक कुंडीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया। साथ ही, पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रत्येक घरों में पौधा वितरण किया गया | साथ ही, गुरुदेव के विचारों को अखण्ड ज्योति पत्रिका एवं दीवार लेखन के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया।जिसमें गायत्री परिवार सहरसा के युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं प्रज्ञा मंडल के सक्रिय कार्यकर्ताओं ने अहम भूमिका निभाई

चलो रे मन शांतिकुंज हरिद्वार....

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा के बाल संस्कारशाला के बच्चे, उनके अभिभावक, युवा मण्डल , युवती मण्डल एवं गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के विद्यार्थियों की 125 लोगो की टोली का शांतिकुंज परिचय सत्र के लिए आज रात 10:15 बजे ट्रेन से प्रस्थान ...

हरिद्वार जाने के क्रम में लक्सर् स्टेशन...

देव संस्कृति विश्व विद्यालय भ्रमण के क्रम में कक्षा में भाग लेते सृजन सैनिक

सहरसा से आये लोगो का परिचय कराते विनीत...

कक्षा संचालित करते डीन वेलफ़ेयर श्री संदीप कुमार...

तन्मयता पूर्वक ग्रहण करतेजिज्ञासु...

द्वितीय दिवस संध्याकालीन कक्षा

विषय :- संगीत का प्रभाव / मित्रता क्यों और कैसे...

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का किया गया आयोजन

खर्चीली शादी हमें बनाती है दरिद्र व बेईमान: डॉ अरुण

सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण जायसवाल व सत्र मे मौजूद श्रद्धालु.

प्रतिनिधि, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा की खर्चीली शादी हमें दरिद्र व बेईमान बनाती है. सचमुच में लोभ हमारे अंदर से चला जाये तो हमारा व्यक्तित्व निखर जायेगा. उन्होंने कहा कि तमोगुणी व्यक्ति के लिए जीवन बोझ है. रजो गुणी व्यक्ति के लिए जीवन एक अवसर है एवं सतो गुणी व्यक्ति के लिए जीवन एक रहस्य है. धरती उनलोगों को बोझ समझती है. जिनके पास कोई लक्ष्य नहीं होता. जीवन में हम डटे हों तो डर आयेगा एवं चला भी जायेगा. लेकिन हम उस परिस्थिति में भी विचलित नहीं होंगे. हमारा जीवन उद्देश्यपूर्ण हो तो हम स्वयं के साथ दूसरों के लिए भी लाभदायक, आरामदायक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होंगे. जीवन में हर प्रश्नों के हल स्वयं ही ढूंढकर उसपर अंतिम तक चलते रहने में ही जीवन की सार्थकता है. लेकिन आजकल लोगों के लिए जिंदगी सिर्फ पे, प्रमोशन, पेंशन, पोजीशन, पावर एवं प्रेस्टीज तक ही सिमट कर रह गया है. ऐसा जीवन ही हमें अंदर से खोखला बनाती चली जाती है. हमें अपने जीवन में नैतिकता, सुसंस्कार को विकसित करना चाहिए. माता-पिता को अपने बच्चों में अच्छे संस्कार देना चाहिए. अच्छे संस्कार हम तब ही दे पाएंगे जब हम स्वयं संस्कारी हों. हम आपने जीवन में उत्साहित हैं, सकारात्मक हैं तो सफलता निश्चित रूप से मिलेगी. जीवन में उत्साहित रहने पर जिंदगी खेल बन जाती है. इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ के प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल, युवा मंडल एवं युवती मंडल मौजूद थे.

दुर्गा स्थान के प्रांगण में बैठक में उपस्थित गायत्री परिवार के सदस्य। • हिन्दुस्तान

प्रमंडलीय बैठक में संगठन पर चर्चा

सत्तर कटैया। सोशल क्लब पंचगछिया पटोरी अवस्थित दुर्गा मंदिर परिसर में गायत्री परिवार की एक प्रमंडलीय बैठक हुई। सहरसा, सुपौल एवं मधेपुरा से आये गायत्री परिवार के सदस्यों ने बैठक में संगठनात्मक संबंधित चर्चा की। ट्रस्टी अरूण कुमार ने लोगों से गुरूदेव के बताये मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित किया। मौके पर अशोक कुमार सिंह, बचनेश्वर सिंह, ललन कुमार सिंह, बच्चा कामत, जवाहर सिंह, रतन सिंह, दिनेश दिनकर, चेतन्य वर्मा, अजीत कुमार सिंह सहित गायत्री परिवार के अन्य सदस्य उपस्थित थे।

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में कार्यक्रम में मौजूद बच्चे। • हिन्दुस्तान

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में कार्यक्रम में मौजूद बच्चे। • हिन्दुस्तान

लक्ष्यविहीन व्यक्ति धरती के लिए हैं बोझ

सहरसा। रविवार को शहर के गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कु जायसवाल ने कहा खर्चीली शादी हमें दरिद्र और बेईमान बनाती है। अगर लोभ हमारे अंदर से चला जाय तो हमारा व्यक्तित्व निखर जाएगा। उन्होंने कहा धरती उनलोगों को बोझ समझती है जिनके पास कोई लक्ष्य नहीं होता। यदि हमारा जीवन उद्देश्यपूर्ण हो तो हम स्वयं के साथ साथ दूसरों के लिए भी लाभदायक व प्रेरणादायक सिद्ध होंगे। हमें अपने जीवन मे नैतिकता, सुसंस्कार को विकसित करना चाहिए। माता–पिता को अपने बच्चों मे अच्छे संस्कार देना चाहिए। इस अवसर पर प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल, युवा मंडल और युवती मंडल मौजूद थे।

जीवन मौज मस्ती के लिए नहीं अपितु अच्छे कर्म करने के लिए होते हैं: डॉ अरुण कुमार जायसवाल

गरीब दर्शन सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवासरीय सत्र का शुभारंभ रुद्राभिषेक, हवन यज्ञ, विभिन्न संस्कारों से हुआ। साथ ही व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का शुभारंभ गान, ज्ञान और ध्यान से हुआ। इस क्रम में गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि कामना, इच्छा और चाहत पूरी नहीं होती। भक्ति भाव से किया गया कर्म ही पूरा होता है। भोग विलास का जीवन जरूरी नहीं । जरूरी है तो सादा जीवन उच्च विचार।जीवन में समझदारी जरूरी है।जीवन को सहजता पूर्वक जीना चाहिए दबाव में नहीं। जब जीवन में समझ विकसित हो जाती है तब जीवन में कला आती है जो जीवन को सहजता पूर्वक जीने में हमारी सहायता करती है और जब कला निखरती है तब सौंदर्य निखरता है।जब जिंदगी की समझ विकसित होती है।कला और कुशलता के साथ तब जीवन में रचनात्मकता विकसित होती है और कुशलता से क्षमता निखरती है फिर कर्म में कुशलता और कला भी आती चली जाती है । सामान्य जीवन में जीवन को खेल नहीं समझा जा सकता। अगर जीवन खेल बन जाती है तो जीवन में फिर कला और सौंदर्य निखरता है । परम पूज्य गुरुदेव के अनुसारः शिशुवत सरलता है तो जिंदगी खेल बन जाती है । अगर जीवन ऐसा हो जाता है तो जीवन हमेशा हर्ष, उत्साह से भरा रहता है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विनीत साहू, प्रकाश कावरा और अर्चना कावरा उपस्थित थे ।मुख्य अतिथिगण के द्वारा भी सत्र को संबोधित किया गया। इस क्रम में प्रकाश कावरा ने कहा - कि अरुण कुमार जायसवाल हमारे जीवन में गुरु के रूप में है और उनके मार्गदर्शन में हमारा जीवन आध्यात्मिकता की ओर मुड़ा । इस क्रम में श्रीमती अर्चना कावरा ने कहा गायत्री शक्तिपीठ की व्यवस्था अरुण जी के मार्गदर्शन में बहुत ही सुचारू रूप से चल रहा है। इस क्रम में विनीत साहू जी ने संबोधित करते हुए सत्र को कहा- मैंने जो भी सीखा है वह श्री अरुण कुमार जी के द्वारा ही सीखा । मेरी जिंदगी आध्यात्मिकता की ओर मुड़ी तो वह अरुण कुमार के द्वारा ही । उन्होंने कहा जीवन मौज मस्ती के लिए नहीं अच्छे कर्म करने के लिए होते हैं।

खर्चीली शादी हमें दरिद्र और बेईमान बनाती है : डॉ. अरुण

भास्कर न्यूज | सहरसा

कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. अरुण जायसवाल।

स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि खर्चीली शादी हमें दरिद्र और बेईमान बनाती है। तमोगुणी व्यक्ति के लिए जीवन बोझ है। रजो गुणी व्यक्ति के लिए जीवन एक अवसर है और सतो गुणी व्यक्ति के लिए जीवन एक रहस्य है । उन्होंने कहा कि धरती उनलोगों को बोझ समझती है जिनके पास कोई लक्ष्य नहीं होता। जीवन में यदि हम डटे हों तो डर आएंगी और चली भी जाएगी। किन्तु हम उस परिस्थिति में भी विचलित नहीं होंगे। यदि हमारा जीवन उद्देश्यपूर्ण हो तो हम स्वयं के साथ साथ दूसरों के लिए भी लाभदायक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होंगे। हमें अपने जीवन मे नैतिकता, सुसंस्कार को विकसित करना चाहिए । माता–पिता को अपने बच्चों में अच्छे संस्कार देना चाहिए । इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ के प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल, युवा मंडल और युवती मंडल मौजूद थे ।

सतो गुणी व्यक्ति के लिए जीवन एक रहस्य है: डॉ अरुण कुमार जायसवाल

नवबिहार दूत संवाददाता

सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा खचीर्ली शादी हमें दरिद्र और बेईमान बनाती है। अगर सचमुच में लोभ हमारे अंदर से चला जाय तो हमारा व्यक्तित्व निखर जाएगा। उन्होंने कहा-तमोगुणी व्यक्ति के लिए जीवन बोझ है। रजो गुणी व्यक्ति के लिए जीवन एक अवसर है और सतो गुणी व्यक्ति के लिए जीवन एक रहस्य है।धरती उनलोगों को बोझ समझती है। जिनके पास कोई लक्ष्य नहीं होता। जीवन में यदि हम डटे हों तो डर आएंगी और चली भी जाएगी किन्तु हम उस परिस्थिति में भी विचलित नहीं होंगे। यदि हमारा जीवन उद्देश्यपूर्ण हो तो हम स्वयं के साथ साथ दूसरों के लिए भी लाभदायक, आरामदायक सिद्ध होंगे। प्रेरणा दायक सिद्ध होंगे। जीवन मे हर प्रश्नों के हल स्वयं ही ढूंढकर उसपर अंतिम तक चलते रहने में ही जीवन की सार्थकता है।लेकिन आजकल लोगों के लिए जिंदगी सिर्फ पेय, प्रमोशन, पेंशन, पोजीशन, पावर और प्रेस्टीज तक ही सिमट कर रह गई है। ऐसा जीवन ही हमें अंदर से खोखला बनाती चली जाती है।हमें अपने जीवन मे नैतिकता, सुसंस्कार को विकसित करना चाहिए।कहा माता-पिता को अपने बच्चों मे अच्छे संस्कार देना चाहिए।अच्छे संस्कार हम तब ही दे पाएंगे जब हम स्वयं संस्कारी हों।अगर हम अपने जीवन मे उत्साहित हैं, सकारात्मक हैं तो सफलता निश्चित रूप से मिलेगी। जीवन मे उत्साहित रहने पर जिंदगी खेल बन जाती है और तब हमे अपनी जिंदगी बोझ नहीं लगती। जीवन की सार्थकता तब हमे समझ आने लगती है। इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल, युवा मंडल और युवती मंडल मौजूद थे।

अच्छे कर्म करने के लिए मिलता है जीवन

सहरसा. गायत्री शक्तिपीठ में रविवासीय सत्र का शुभारंभ रुद्राभिषेक, हवन यज्ञ, विभिन्न संस्कारों से हुआ. साथ ही व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का शुभारंभ गान, ज्ञान व ध्यान से हुआ. इस क्रम में गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने सत्र को संबोधित करते कहा कि कामना, इच्छा व चाहत पूरी नहीं होती. भक्ति भाव से किया गया कर्म ही पूरा होता है. सामान्य जीवन में जीवन को खेल नहीं समझा जा सकता. जीवन खेल बन जाता है तो जीवन में फिर कला व सौंदर्य निखरता है. परम पूज्य गुरुदेव के अनुसार शिशुवत सरलता है तो जिंदगी खेल बन जाती है. जीवन ऐसा हो जाता है तो जीवन हमेशा हर्ष, उत्साह से भरा रहता है. इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में विनीत साहू, प्रकाश कावरा व अर्चना कावरा मौजूद थे. मुख्य अतिथियों द्वारा भी सत्र को संबोधित किया गया. इस क्रम में प्रकाश कावरा ने कहा कि डॉ अरुण कुमार जायसवाल उनके जीवन में गुरु के रूप में हैं. उनके मार्गदर्शन में उनका जीवन आध्यात्मिकता की ओर मुड़ा. इस क्रम में अर्चना कावरा ने कहा कि गायत्री शक्तिपीठ की व्यवस्था इनके मार्गदर्शन में बहुत ही सुचारू रूप से चल रहा है. इस क्रम में विनीत साहू ने कहा कि उन्होंने जो भी सीखा है, वह अरुण कुमार के द्वारा ही सीखा. उन्होंने कहा कि जीवन मौज मस्ती के लिए नहीं अच्छे कर्म करने के लिए होते हैं.

जीवन मौज मस्ती के लिए नहीं अपितु अच्छे कर्म करने के लिए होते हैं: डॉ अरुण कुमार जायसवाल

नवबिहार दूत संवाददाता

सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में रविवासरीय सत्र का शुभारंभ रुद्राभिषेक, हवन यज्ञ, विभिन्न संस्कारों से हुआ। साथ ही व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का शुभारंभ गान, ज्ञान और ध्यान से हुआ। इस क्रम में गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि कामना, इच्छा और चाहत पूरी नहीं होती। भक्ति भाव से किया गया कर्म ही पूरा होता है। भोग विलास का जीवन जरूरी नहीं । जरूरी है तो सादा जीवन उच्च विचार।जीवन में समझदारी जरूरी है।जीवन को सहजता पूर्वक जीना चाहिए दबाव में नहीं। जब जीवन में समझ विकसित हो जाती है तब जीवन में कला आती है जो जीवन को सहजता पूर्वक जीने में हमारी सहायता करती है और जब कला निखरती है तब सौंदर्य निखरता है।जब जिंदगी की समझ विकसित होती है।कला और कुशलता के साथ तब जीवन में रचनात्मकता विकसित होती है और कुशलता से क्षमता निखरती है फिर कर्म में कुशलता और कला भी आती चली जाती है । सामान्य जीवन में जीवन को खेल नहीं समझा जा सकता। अगर जीवन खेल बन जाती है तो जीवन में फिर कला और सौंदर्य निखरता है । परम पूज्य गुरुदेव के अनुसारः शिशुवत सरलता है तो जिंदगी खेल बन जाती है । अगर जीवन ऐसा हो जाता है तो जीवन हमेशा हर्ष, उत्साह से भरा रहता है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विनीत साहू, प्रकाश कावरा और अर्चना कावरा उपस्थित थे। मुख्य अतिथिगण के द्वारा भी सत्र को संबोधित किया गया। इस क्रम में प्रकाश कावरा ने कहा – कि अरुण कुमार जायसवाल हमारे जीवन में गुरु के रूप में है और उनके मार्गदर्शन में हमारा जीवन आध्यात्मिकता की ओर मुड़ा । इस क्रम में श्रीमती अर्चना कावरा ने कहा गायत्री शक्तिपीठ की व्यवस्था अरुण जी के मार्गदर्शन में बहुत ही सुचारू रूप से चल रहा है। इस क्रम में विनीत साहू जी ने संबोधित करते हुए सत्र को कहा– मैंने जो भी सीखा है वह श्री अरुण कुमार जी के द्वारा ही सीखा । मेरी जिंदगी आध्यात्मिकता की ओर मुड़ी तो वह अरुण कुमार के द्वारा ही । उन्होंने कहा जीवन मौज मस्ती के लिए नहीं अच्छे कर्म करने के लिए होते हैं।

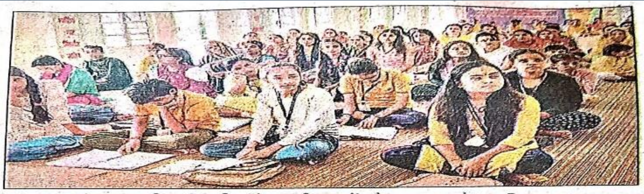

रविवार को गायत्रती शक्तिपीठ में कार्यक्रम में मौजूद छात्राएं। • हिन्दुस्तान

भक्तिभाव से किया कर्म होता है पूरा

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में रविवासरीय सत्र का शुभारंभ रुद्राभिषेक, हवन यज्ञ, विभिन्न संस्कारों से हुआ । साथ ही व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का शुभारंभ गान, ज्ञान और ध्यान से हुआ। इस क्रम में गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने सत्र को संबोधित करते हुए कहा कामना, इच्छा और चाहत पूरी नहीं होती। भक्ति भाव से किया गया कर्म ही पूरा होता है। जरूरी है तो सादा जीवन उच्च विचार। जीवन में समझदारी जरूरी है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विनीत साहू, प्रकाश कावरा और अर्चना कावरा ने कहा अरुण कुमार जायसवाल जी हमारे जीवन में गुरु के रूप में है और उनके मार्गदर्शन में हमारा जीवन आध्यात्मिकता की ओर मुड़ा ।

भोग-विलास का जीवन जरूरी नहीं, सदा उच्च विचार को दें प्राथमिकता : डॉ. अरुण

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का किया गया आयोजन

भास्कर न्यूज |सहरसा

कामना, इच्छा और चाहत पूरी नहीं होती। भक्ति भाव से किया गया कर्म ही पूरा होता है। भोग विलास का जीवन जरूरी नहीं, जरूरी है तो सादा जीवन और उच्च विचार का।

ये बाते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने रविवार को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि जीवन में समझदारी जरूरी है। कर्म में कुशलता और कला भी आती चली जाती है। गायत्री शक्तिपीठ में रविवासरीय सत्र का शुभारंभ रुद्राभिषेक, हवन यज्ञ एवं विभिन्न संस्कारों से हुआ। साथ ही व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का शुभारंभ गान, ज्ञान और ध्यान से हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विनीत साहू, प्रकाश कावरा और अर्चना कावरा उपस्थित थे। सत्र को संबोधित करते हुए प्रकाश कावरा ने कहा कि जीवन मौज मस्ती के लिए नहीं बल्कि अच्छे कर्म करने के लिए होते हैं।

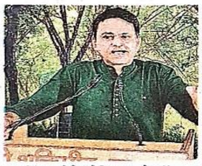

कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. अरुण कुमार जायसवाल।

कामना, इच्छा व चाहत की कभी होती नहीं पूर्ति : डा. अरूण

संवाद सहयोगी, जागरण • सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में रविवासरीय सत्र का शुभारंभ रुद्राभिषेक, हवन यज्ञ, विभिन्न संस्कारों से हुआ । इसके पश्चात गान, ज्ञान और ध्यान से साथ व्यक्तित्व परिष्कार सत्र शुरू हुआ। संबोधित करते हुए ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि – कामना, इच्छा और चाहत कभी पुरी नहीं होती। भक्ति भाव से किया गया कर्म ही पूरा होता है भोग विलास का जीवन जरूरी नहीं। जरूरी है, सादा जीवन उच्च विचार। कहा कि जीवन में समझदारी जरूरी है ।

जीवन को सहजता पूर्वक जीना चाहिए ,दबाव में नहीं। जब जीवन में समझ विकसित हो जाती है तब जीवन में कला आती है, जो जीवन को सहजता पूर्वक जीने में हमारी सहायता करती है और जब कला निखरती है तब सौंदर्य निखरता है। उन्होंने कहा कि जब जिंदगी की समझ विकसित होती है कला और कुशलता के साथ तब जीवन में रचनात्मकता विकसित होती है और कुशलता से क्षमता निखरती है, फिर कर्म में कुशलता और कला भी आती चली जाती है । सामान्य जीवन में जीवन को खेल नहीं समझा जा सकता। अगर जीवन खेल बन जाती है तो जीवन में फिर कला और सौंदर्य निखरता है । बताया कि परम पूज्य गुरुदेव के अनुसारः शिशुवत सरलता है तो जिंदगी खेल बन जाती है । अगर जीवन ऐसा हो जाता है तो जीवन हमेशा हर्ष, उत्साह से भरा रहता है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विनीत साहू, प्रकाश कावरा और अर्चना कावरा उपस्थित थे । मुख्य अतिथिगण ने भी सत्र को संबोधित किया। मौके पर बड़ी संख्या में गायत्री परिजन मौजूद रहे।

संबोधित करते ट्रस्टी • सौ.शक्तिपीठ

गायत्री गीतमाला की शूटिंग संपन्न

सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के द्वारा गायत्री गीतमाला भाग 12 की शूटिंग मंगलवार को संपन्न हुई । शूटिंग नया बाजार, जयप्रकाश उद्यान ,गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के परिसर में संपन्न हुई ।12वीं सीरीज में 11 प्रज्ञा गीतों में ऐसे भजन है जो हमें श्रद्धा भक्ति के भाव से उत्प्रोत तो करते हैं। इसके अलावा संस्कृत में गायत्री अष्टकम और गुरु अष्टकम का भी निर्माण हुआ है जिसको स्वर अभिनव शेट्टी जायसवाल, डॉ अरुण कुमार जायसवाल, कृतिका गौतम, पूनम एवं प्रखर ने स्वर दिया।

मंगलवार को कार्यक्रम के दौरान गीतमाला में भजन गाते कलाकार। • हिन्दुस्तान

गायत्री शक्तिपीठ की ओर से गीतमाला की शूटिंग संपन्न

गायत्री शक्तिपीठ में स्थापित शिव मंदिर में हुए शूटिंग का दृश्य।

भास्कर न्यूज |सहरसा

स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ द्वारा गायत्री गीतमाला भाग 12 की शूटिंग मंगलवार को संपन्न हो गई। यह शूटिंग पिछले तीन दिनों से चल रही थी। गायत्री गीतमाला की शूटिंग नया बाजार, जयप्रकाश उद्यान ,गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के परिसर में संपन्न हुई । शक्तिपीठ के अरूण कुमार जायसवाल ने बताया कि 12 वीं सीरीज में 11 प्रज्ञा गीतों में ऐसे भजन है जो हमें श्रद्धा भक्ति के भाव से ओतप्रोत तो करते ही हैं साथ ही समर्पण और सुमिरन की ऊर्जा को भी प्रदान करते हैं । फिल्माए गए गीत में मां तेरे चरणों में हम शीश झुकाते है,श्रद्धा पुरित होकर दो अश्रु चढ़ाते हैं ,डाल नजर मां,ला इंसानियत,कितनी बुराइयां है, कितनी लड़ाइयां है ,श्रीराम जी का कीर्तन हम रोज गाएंगे आवागमन के चक्र से हम छूट जाएंगे , एक दिन ही जी मगर इंसान बनकर जी , करते जो सहकार सफलता उनके चेरी है। इसके अलावा संस्कृत में गायत्री अष्टकम और गुरु अष्टकम का भी निर्माण हुआ है। जिसे स्वर अभिनव शेट्टी जायसवाल ने दिया है। अन्य गीतों को डॉ अरुण कुमार जायसवाल, कृतिका गौतम, पूनम एवं प्रखर ने स्वर दिया है। नवरात्रि में इस म्यूजिक एल्बम के रिलीज होने की उम्मीद है। स्वरांजलि की निर्देशिका प्रो भारती गौतम ने सभी गीतों की कोरियोग्राफी करवाई। शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान में अब तक 100 से अधिक प्रज्ञा-गीतों का निर्माण कर स्वरबद्ध किया जा चुका है और शूटिंग भी हो चुकी है ।

शक्तिपीठ में गायत्री गीतमाला की हुई शूटिंग

संस, सहरसाः गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के द्वारा बीते तीन दिनों ने शहर के विभिन्न स्थलों पर गायत्री गीतमाला भाग 12 वीं शूटिंग की गई। नया बाजार, जयप्रकाश उद्यान ,गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के परिसर में 12 वीं सीरीज में 11 प्रज्ञा गीतों में ऐसे भजन का शूटिंग किया गया, जो हमें श्रद्धा भक्ति के भाव से ओतप्रोत तो करता ही है। साथ ही समर्पण और सुमिरन की ऊर्जा भी प्रदान करता हैं । इस गीत माला में मां तेरे चरणों में हम शीश झुकाते है ,श्रद्धा पूरित होकर दो अश्रु चढ़ाते हैं ,डाल नजर मां,ला इंसानियत,कितनी बुराइयां है, कितनी लड़ाइयां है, श्री राम जी का कीर्तन हम रोज गाएंगे, आवागमन के चक्कर से हम छूट जाएंगे , एक दिन ही जी मगर इंसान बनकर जी, करते जो सहकार सफलता उनके चेरी है। इसके अलावा संस्कृत में गायत्री अष्टकम और गुरु अष्टकम का भी निर्माण हुआ है, जिसको अभिनव शेट्टी जायसवाल स्वर दिया एवं अन्य गीतों को डा. अरुण कुमार जायसवाल, कृतिका गौतम, पूनम एवं प्रखर द्वारा स्वर दिया गया। नवरात्रि में इस म्यूजिक एलबम के रिलीज होने की उम्मीद है। फिल्मांकन में प्रेम शंकर भगत, कैमरामैन रोशन कुमार, आनंद झा, गोलू कुमार एवं पूर्णिया से आए अमोल कुमार, गोविंद जी, सूरज की महत्वपूर्ण भूमिका रही। शूटिंग में स्वरांजलि की छात्राओं और गायत्री शक्तिपीठ के युवा मंडल – युवती मंडल ने हिस्सा लिया। गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरूण कुमार जायसवाल ने कहा कि शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान में अब तक एक सौ से अधिक प्रज्ञा गीतों का निर्माण कर स्वरबद्ध किया जा चुका है , जिसकी शूटिंग भी हो चुकी है ,इसमें सभी स्थानीय कलाकारों ने हिस्सा लिया है। कहा कि यह सभी गीत हमारे अंदर प्रज्ञा अर्थात विवेक को जगाते हैं। गीत का लेखन डा. लीना सिंहा और शांतिकुंज हरिद्वार की ओर से किया गया।

गीतमाला की शूटिंग में अपनी प्रस्तुति देती बच्चियांछाया• सौजन्यः गायत्री शक्तिपीठ

परिवार अच्छा होगा, तभी बेहतर होगा इंसान, समाज और राष्ट्र : डा. अरुण

संस, सहरसाः रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में साप्ताहिक कार्यक्रम का शुभारंभ रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ एवं विभिन्न संस्कार से किया गया। इस मौके पर व्यक्तित्व परिष्कार सत्र की शुरुआत गान, ज्ञान और ध्यान से किया गया। सत्र को संबोधित करते हुए शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने समाज के वर्तमान दशा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि परिवार निर्माता नारी होती है। अगर परिवार अच्छा होगा तो इंसान अच्छा होगा, समाज अच्छा होगा, राष्ट्र अच्छा होगा नारी परिवार की धुरी होती है। दुर्भाग्य की बात है कि आज हम उस चीज को भूल गए हैं। मध्य प्रदेश की घटना का जिक्र करते हुए कहा कि आज आज प्रश्न यह है कि जब हम सह शिक्षा प्रणाली चला रहे हैं, जहां लड़की और लड़का समान रूप से पढ़ाई करते हैं तो फिर लड़कियों को अपमानित करने वाला ऐसा निर्णय क्यों लिया गया। उन्होंने कहा कि आज के बच्चे बहुत संवेदनशील होते है। और खुद ही मानसिक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों से जूझ रहे है। निराश- हताश तनाव दबाव में रहते हैं। आज के बच्चों के लिए सार्वजनिक छवि अधिक महत्वपूर्ण होता है। समय आ गया है व्यवस्थापक को विचारशील होना चाहिए। निर्णय लेने में संतुलन होना चाहिए। स्थान और परिवेश के अनुसार हर व्यवस्था और व्यवस्थापक को अपनी मान्यता है। आज धीरे-धीरे सारी चीजें अवगति की ओर जा रही है। आज इतनी परेशानी सिर्फ इसलिए है कि हम जिम्मेदार नहीं है। कोलकाता में हुए शर्मनाक और जघन्य अपराध पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज विश्व में चारों ओर अंधकार ही अंधकार छाया हुआ है। आज इंसान के शरीर में दूषित आत्मा का वास है। ऐसी जघन्यतम और झकझोर देने वाली घटना कौन कर सकता है, दूषित आत्मा को छोड़कर। आज का व्यक्ति मोह में अंधा, काम में अंधा, क्रोध में अंधा हो गया है। ऐसे में व्यक्ति के अंदर प्रेम नहीं होता। गायत्री शक्तिपीठ प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल, के युवा मंडल, युवती मंडल उपस्थित रहे।

संबोधित करते ट्रस्टी डा . अरुण

परिवार अच्छा होगा तो अच्छे राष्ट्र का भी हो जाएगा निर्माण : डॉ. अरुण

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का किया गया आयोजन

भास्कर न्यूज | सहरसा

परिवार निर्माता नारी होती है। अगर परिवार अच्छा होगा तो इंसान, समाज और राष्ट्र अच्छा होगा। नारी परिवार की धूरी होती है। दुर्भाग्य की बात है कि आज हम इस चीज को भूल गए हैं। ये बातें डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने रविवार को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए कहीं।

उन्होंने कहा कि आज के बच्चे बहुत संवेदनशील होते है और खुद ही मानसिक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों से जूझते हैं। आज के बच्चों के लिए सार्वजनिक छवि अधिक महत्वपूर्ण होता है। अब व्यवस्थापक को विचारशील होने का समय आ गया है। स्थान और परिवेश के अनुसार हर व्यवस्था और व्यवस्थापक की अपनी मान्यता है। आज धीरे-धीरे सारी चीजें अवगति की ओर जा रही है। आज इतनी परेशानी सिर्फ इसलिए है कि हम जिम्मेदार नहीं है। उन्होंने कहा कि बच्चा उपदेश नही, आचरण की भाषा सीखता है। आज सबसे ज्यादा जरूरी है कि आने वाली पीढ़ी को अच्छे संस्कार और अच्छी परवरिश देनी चाहिए। जीवन की सबसे प्रथम और उत्तम पाठशाला परिवार होता है। इसी क्रम में गायत्री मंत्र की महिमा बताते हुए उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र का संबंध जड़ और चेतन से है। इसका संबंध सभी प्राणियों से है। गायत्री मंत्र सभी प्राणियों के लिए है। रविवासरीय कार्यक्रम का शुभारंभ रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ एवं विभिन्न संस्कार से किया गया। साथ ही व्यक्तित्व परिष्कार सत्र की शुरुआत गान, ज्ञान और ध्यान से किया गया।

इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ प्रज्ञा मेडल, महिला मंडल, के युवा मंडल, युवती मंडल उपस्थित रहे।

सत्र को संबोधित करते डॉ अरूण कुमार जायसवाल।

परिवार निर्माता नारी ही परिवार की धुरी होती है

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में रविवारसीय कार्यक्रम का शुभारंभ रुद्राभिषेक, हवन–यज्ञ एवं विभिन्न संस्कार से किया गया। साथ ही, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र की शुरुआत गान, ज्ञान और ध्यान से किया गया। सत्र को संबोधित करते ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा परिवार निर्माता नारी होती है। परिवार अच्छा होगा तो इंसान अच्छा होगा, समाज अच्छा होगा, राष्ट्र अच्छा होगा। नारी परिवार धूरी होती है। उन्होंने आगे कहा आज के बच्चे बहुत संवेदनशील होते है। खुद ही मानसिक स्वास्थ जैसे मुद्दों से जूझ रहे है। निराश हताश तनाव दबाव में रहते हैं। समय आ गया है व्यवस्थापक को विचारशील होना चाहिए। इस अवसर पर प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल के युवा मंडल, युवती मंडल उपस्थित रहे।

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद बच्चे। ● हिन्दुस्

भस्त्रिका प्राणायाम के लाभ

इस प्राणायाम से शरीर को प्राणवायु अधिक मात्रा में मिलती है जिसके कारण यह शरीर के सभी अंगों से दूषित पदार्थों को दूर करता है। तेज गति से श्वास लेने और छोड़ने के क्रम में हम ज्यादा मात्रा में ऑक्सीजन लेते हैं और कॉर्बन डॉयऑक्साइड छोड़ते हैं जो फेफड़ों की कार्य क्षमता को बढ़ाता है और हृदय में रक्त नलिकाओं को भी शुद्ध व मजबूत बनाए रखता है। भस्त्रिका प्राणायाम करते समय हमारा डायाफ्राम तेजी से काम करता है, जिससे पेट के अंग मजबूत होकर सुचारु रूप से कार्य करते हैं और हमारी पाचन शक्ति भी बढ़ती है।

मस्तिष्क से संबंधित सभी विकारों को मिटाने के लिए भी यह लाभदायक है। आंख, कान और नाक के स्वास्थ्य को बनाए रखने में भी यह प्राणायाम लाभदाय है। वात, पित्त और कफ के दोष दूर होते हैं तथा पाचन संस्थान, लीवर और किडनी की अच्छे से एक्सरसाइज हो जाती है। मोटापा, दमा, टीबी और श्वासों के रोग दूर हो जाते हैं। स्नायुओं से संबंधित सभी रोगों में यह लाभदायक माना गया है।

माह अगस्त में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- श्री अभिनव कुमार (जज, सहरसा):- प्राकृतिक चिकित्सा के लिए
- श्रीमति मोनिका:- प्राकृतिक चिकित्सा के लिए
- सुश्री अनन्या कुमारी (जज, मुंगेर):- रुद्राभिषेक, प्राकृतिक चिकित्सा एवं यज्ञ के लिए
- श्री मति सुप्रिया नारायण (अमेरिका):- रुद्राभिषेक, प्राकृतिक चिकित्सा एवं यज्ञ के लिए
- सुश्री इशिता नारायण (अमेरिका):- रुद्राभिषेक, प्राकृतिक चिकित्सा एवं यज्ञ के लिए

आगामी कार्यक्रम

- **1 सितंबर जिला स्तरीय मासिक बैठक**
- **15 सितंबर सहरसा उपजोन वार्षिक बैठक**
- **प्रत्येक रविवार व्यक्तित्व परिष्कार परिष्कार सत्र की कक्षा आयोजित है।**

आत्मबोध

हे आत्मा ! तुम स्वराड् हो, परमात्मा से मिलकर विराट हो
अपनी महिमा से तुम सभी को, क्षणभर में कर सकती हठात् हो ।। हे आत्मा !
महापुरूषों में, महामानवों में, साधुओं में और सन्तों में
दिखती है तुम्हारी दिव्यता और न जाने कितनी भव्यता ।। हे आत्मा !
जिन्होंने भी जाना है तुमको, स्वयं को ही तो जाना है
जान लिया तो मान लिया है कि सबमें बस तुम्हारी ही सत्ता ।। हे आत्मा !
बुद्ध हों, महावीर हों या हों नानक और कबीर
सभी सिर्फ नाम-रूप हैं, पर उनका प्रकाश तुम ही तो हो ।। हे आत्मा !
दीये से दीया जलता है जैसे, वैसे ही तुम सबका दीया हो
अग्नि सबमें एक ही तुम हो, पर मूढ मनुज समझता नहीं है ।। हे आत्मा !
धर्म-जाति-सम्प्रदायों में, आज वह भटका-भटका है
न जाने कितनी बेडि.यों में, वह मनुज अटका-अटका है ।। हे आत्मा !
हे आत्मा ! हर मनुज में तुम ही प्रकृति, तुम ही पुरुष हो
बस इसी स्वरूप का परिचय, दे दो सारी मानवजाति को ।। हे आत्मा !
समा बाँध दो जग में ऐसा, हर किसी को आत्मबोध हो जाए
कस्तूरी स्वयं की नाभि में पाकर, परम धन्यता से वह तृप्त हो जाए ।। हे आत्मा !

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे-यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार : गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)
संपर्क सूत्र : 06478-228787, 9470454241
Email : gspsaharsa@gmail.com
Website : https://gsps.co.in/
Social Connect रू https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA
https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39
https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en
https://www.kooapp.com/profile/gayatri7AJ0S6
https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en
https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/